International Journal of Applied Research 2015; 1(10): 201-203

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 201-203
www.allresearchjournal.com
Received: 11-07-2015
Accepted: 12-08-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप

प्रसाद के नाटकों में गीत–योजना

डॉ. शिवदत्त शर्मा

प्रस्तावना

हिन्दी नाटक परम्परा में जयशंकर प्रसाद का नाम बडे आदर और सम्मान से लिया जाता है। प्रसाद के नाटक न केवल भारतीयता के रंग से सराबोर दिखाई देते हैं अपितु भारतीय संस्कृति और सभ्यता की भी धरोहर हैं। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम हिलोरें लेता दिखाई देता[1] प्रसाद के नाटकों को पढने वालों को यह जानने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती कि नाटककार प्रसाद में सामान्य लेखक होने के साथसाथ भावुक कवि हृदय भी लिए हुए हैं।[2] उनके कवि हृदय की अभिव्यक्ति नाटकों में ही नहीं अपितु गद्यांशों में भी स्वतः मुखरित दिखाई देती हैं। प्रेम और यौवन के व्याख्या स्थलों पर प्रसाद का छायावाद अत्यन्त मुखर हो कर पाठक को विस्मय मुग्ध कर देता है। अरस्तु ने नाटकों में गीत को आवश्यक माना था। भारत में नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरत मुनि ने भी गीत को नाटक का अभिन्न अंग माना है।[3] उनके अनुसार नाटक में गीत का मणिकांचन संयोग है। प्रसिद्ध नाटककार हरिकृष्णप्रेमी भी नाटक में गीत का मिश्रण प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से आवश्यक मानते हैं। उनके अनुसार रस की दृष्टि से भी संगीत बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जो रस वातावरण एवं प्रभाव लेखक नाटक में पैदा करना चाहता है गीत उसको और गहरा देता है। डॉ रघुवंश गीत को नाटक की जीवन शक्ति मानते हैं। वे मानते हैं कि गीत से पात्रों को और भी मनोहर सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। गीतों के द्वारा पात्रों के उत्थान पतन आशा निराशा की मुखर अभिव्यक्ति होती है।[4]

प्रसाद जी के प्रादुर्भाव के साथ एक ओर भारतेन्दु शैली पर प्रचुर गीत लिखे जा रहे थे। दूसरी ओर पारसी थियेटर के अटपटे गानों की धूम थी। प्रसाद जी भी अपने सज्जन और करुणालय नाटकों में गीतों का प्रयोग कर चुके थे [5] किन्तु विषय और शैली उनके बडे नाटकों मेंही स्थिर हो पाए। डॉ नगेन्द्र के विचारानुसार– प्रसाद जी के सभी नाटकों में काव्य की गहरी एवं प्रचुर अन्तर्धारा बह रही है। उनके सुन्दरतम गीतों का बहुत बडा और उनके नाटकों में बिखरा मिलेगा। यह सत्य है कि उनके नाटकों में गीतों का मिश्रण अभिव्यक्ति को अद्वितीय बना देता है। उनके नाटकों में वर्णित गीतों में गहरी टीस रूप यौवन के चटकीले रंग एवं विलास की उष्ण गन्ध भरी हुई है। इससे प्रमाणित होता है कि प्रसाद जी मूल रूप से कवि थे। उनके नाटकों में गीतों की अन्तर्धारा बह रही है। भारतीय नाट्यशास्त्र उनकें ऐसा करने की अनुमति देता है। नाटको में कतिपय पात्र जब भावोच्छवास में अपने विचारों को गद्य के माध्यम से अभिव्यक्ति नहीं दे पाते तो वे गीतों का आश्रय लेकर अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं। नाटकीय गीतों की विशेषता है कि वे परिस्थिति और भावधारा की आवश्यकतानुसार होते हैं। इन गीतों में विरहिणी का अदृश्य प्रेम मदोन्मत्त नारी का प्रलाप मातृभूमि का ममत्व देशप्रेम की सत्य निष्ठा आदिगुण सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त दिखाई देते है। प्रसादजी के तीनों नाटकों – चन्द्रगुप्त ध्रुवस्वामिनी[6] और स्कन्दगुप्त में गीत योजना कलात्मक दृष्टि से बेजोड दिखाई देती है। नाटकों में गीति योजना परिस्थिति के अनुकूल सृजित गई है। इसमें काव्यात्मक गरिमा भावसृजना और लाक्षणिकता के साथ साथ स्थान की उपयुक्तता का भी पूरा ध्यान रखा गया है। स्कन्द गुप्त नाटक में केवल सत्रह गीत हैं।उनके गीत की एक बानगी देखिए–

पलना बनें प्रलय की लहरें
शीतल हो ज्वाला की आंधी करुणा केघन छहरें।
दया दुलार करैं पल भर भी विपदा पास न ठहरे।
प्रभु का हो विश्वास सत्य तो सुख के तन फहरैं। [7]

यह गीत कुमार गुप्त की बडी रानी तथा स्कन्द गुप्त की माता देवकी की मनः स्थिति की सूचना देता है। इस गीत में कहा गया है कि संसार के दुखों से प्राणियों की रक्षा के लिए केवल दयामय

प्रभु की कृपा ही एक मात्र आधार है। यदि प्रभु पर हमारा अटल विश्वास हो तो प्रलय की लहरें भी हमारे लिए सुखदायक पालना बन जाएंगीं। करुणाके बादल बरस कर अग्नि को शांन्त कर देंगें। दया तब स्वयं प्राणियों का दुलार करेगी और विपत्तियां एक क्षण भी पास न ठहर सकेंगी।

इस गीत के द्वारा देवकी की धार्मिक भावना तथा प्रभु के प्रति अटल विश्वास को वाणी दी गई है। देवसेना ने इस नाटक में सबसे अधिक गीत गाए हैं। वह नाटक की नायिका है।उसके प्रत्येक गीत में एक विरोध–व्यथा एवं प्रेम की सच्ची टीस अभिव्यक्त होती है। इसमें स्कन्द के प्रति उसका समर्पण स्पष्ट है।उसमें स्खलन को स्थान नहीं है। इसमें भावोद्वोधन की उदात्तता हैं। देवसेना ने वासनात्मक प्रेम को अपने निकट नहीं आने दिया है।

नाटक में गीतों का महत्व–नाटकों में गीत अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। गीतों के महत्व को निम्न लिखित ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है।

1 आनन्द की अनुभूति–गीतों के द्वारा ही पाठकों को नाटकों में अभिरुचि जागृत होती है तथा गीत ही पाठकों अथवा दर्शकों में आनन्द का संचार करते हैं। गीत श्रोता तथा पाठक की सम्पूर्ण चेतना मन बुद्धि प्राण तथा आत्मा को मुग्ध करता है।

2 राष्ट्रीय चेतना –प्रसाद जी ने अपने गीतों द्वारा लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत की। उनकी इसी चेतना ने उन्हें हमारे स्वर्णिम अतीत की ओर जाने का आग्रह किया है। राष्ट्रीय चेतना की द्योतक उनकी पंक्तियां द्रष्टव्य हैं–

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।[8]

3 प्रेम भावना की अभिव्यक्ति–प्रसाद जी के नाटकों में मानव प्रेम भी मुखरित हुआा है। प्रायः उनके गीतों के माध्यम से प्रेम को बहुत सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद जी के नाटकों में प्रेम का प्रवाह सर्वत्र दिखलाई पडता है।

उमड कर चली भिगोने आज तुम्हारा निश्चल आंचल छोर।..
––
यह गीत विजया द्वारा भटार्क के प्रति अपनी तीव्र आसक्ति की अभिव्यक्ति कर रही है।

4 धार्मिक भावना का चित्रण– प्रसाद जी ने गीतों के द्वारा धार्मिक भावना तथा प्रभु के प्रति अटल विश्वास व्यक्त किया है। प्रसाद ने स्पष्ट किया हैं कि दयामय प्रभु की कृपा ही एक मात्र आधार है– पालना बने प्रलय की लहरैं। उसी उद्गार का गीत है।

5 वेदना पीडा का चित्रण–प्रसाद जी ने अपने नाटक में गीतों के माध्यम से वेदना और पीडा का चित्रण अतिसुन्दर रूप से प्रस्तुत किया है– शून्य गगन में खोजता जैसे चन्द्र निराश ।

स्कन्द गुप्त के कुल 16 गीतों को विभिन्न व्यक्तियों से भिन्नभिन्न अवसरों पर गवाया गया है। देवसेना ने पांच गीत गाए हैं। मातृ गुप्त ने तीन स्कन्द गुप्त ने एक तथा नर्तकी ने दो गीत गाए हैं। शेष चार गीत समूह गान हैं। देवसेना द्वारा गाए गए गीत नाटकीय आवश्यकता को पूरा करते हैं। देवसेना का चरित्र प्रेम तथा समर्पण की गाथा में निबद्ध है। उसके गीतों में उसके हृदय के रुदन और पीडा का परिचय मिल जाता है।

न खोज पागल मधुर प्रेम

देवसेना का प्रणय गीत। यह गीत नायिका के विशाल भाव का आभास देता है। स्कन्द गुप्त ने घने प्रेम तन तले 9 नामक गीत द्वारा अपने प्रेम भाव की व्यंजना की है। वातावरण की सृष्टि तथा नाटक प्रभाव की दृष्टि से यह गीत महत्वपूर्ण माना गया है। इस गीत से न केवल देवसेना को विदाई मिलती है बल्कि दर्शक भी दर्द भरे दिल के साथ विदा लेता है।

उसी प्रकार मातृगुप्त के तीन गीत राष्ट्रीय भावना को अंकित करने में सफल रहे हैं। इन तीनों गीतों का सौष्ठव देखिए–

संसृति के वे सुन्दरतम क्षण यों ही भूल नहीं जाना ।
वह उच्छृंखलता थी अपनी कहकर मन मत बहलाना।।[10]

1 उतरोगे कब –कब भूभार पर बारबार क्यों कह रखा था लूंगा मैं अवतार।
उमड रहा है इस भूतल पर दुख का पारावार बाडव लेलिहान जिह्वा का करता विस्तार।।[11]

2 हिमालय के आंगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार उषा ने हंस अभिनन्दन किया और यह पाया हीरक हार।
जगे हम लगे जगाने विश्व लोक में फैला फिर आलोका।
व्योम–तम–पुंज हुआ तब नष्ट अखिल संसृति हो उठी अशोका।।

परिस्थिति की दृष्टि से इन तीनों गीतों का विशेष महत्व है। ये गीत पाठकों में देश के लिए त्याग की भावना जगाते है और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए कठिन परिस्थितियों में भी दृढ रहने की प्रेरणा देते हैं। देवसेना एक गीत के माध्यम से पाठकों को यह संदेश देती है कि हमें स्वतंत्रता के प्रति कठिन–से –कठिन परिस्थिति में भी दृढ रहने का प्रयास करना चाहिए।

देश की दुर्दशा निहारोगे–नामक गीत स्कन्द के द्वारा गाया गया एकमात्र प्रार्थना गीत है जिसमें कवि ईश्वर से स्वतंत्रता की प्रार्थना करता है–

बजा दो वेणु मनमोहन! बजा दो!
हमारे सुप्त जीवन को जगा दो
विमल स्वातन्त्रय का बस मंत्र फूंको।
हमें सब भीति–बन्धन से छुडा दो।[12]

अन्यत्र नर्तकियों द्वारा गाये जाने वाले गीत नेपथ्य गीत कहे जा सकते हैं। इन गीतों में श्रृंगार भाव की प्रधानता है। श्रृंगार में ही विरह भावना भी है। स्कन्द गुप्त नाटक के दूसरे दृश्य में कुमार गुप्तकी सभा में नर्तकियों द्वारा जो गीत गाया गया है उसमें विरही हृदय की पीडा व्यक्त हुई है। नर्तकियां कोयल को संम्बोधित करते हुए कहतीं हैं–

न छेडना उस अतीत स्मृति से
खिंचे हुए बीन–तार कोकिल
करुण रागिनी तडप उठेगी
सुना न ऐसी पुकार कोकिल
हृदय धूल में मिला दिया है
उसे चरण चिन्ह सा किया है
खिले फूल सब गिरा दिया है
न अब बसन्ती बहार कोकिल।।[13]

भले ही कुछ आलोचक इन्हें अनावश्यक मानते हैं परन्तु इन्हें उपयोगी मानने वालों की संख्या भी कम नही है। कुछ आलोचकों का मानना है कि नाटक में गीतों की संख्या अधिक है तथा कहीं कहीं अकारण गीत रखे गए हैं। विशेषतः नर्तकियों द्वारा गाए गीत अनावश्यक तथा अस्वाभाविक प्रतीत होते हैं। डॉ जगन्नाथ प्रसाद शर्मा का मत है कि– स्कन्द गुप्त नाटक की देवसेना अनावश्यक ढंग से अनेक गीत गाती है जो न केवल अनावश्यक है अपितु बोझिल भी लगता हैं। व्यावहारिक दृष्टि से भी ये गाने रंगमंच पर बडे अनुपयुक्त मालूम पडेंगें। प्रसाद मूलतः छायावादी कवि हैं उनके गीतों में भाव गाम्भीर्य है तथा सामान्य पाठकों के लिए ये गीत दुरुह हैं।

श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र का भी यही मत है कि अगर नाटकों में से गीतों को निकाल भी दिया जाए तो भी नाटक पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा।

दूसरी ओर प्रसाद के नाटकों में गीत योजना की प्रशंसा करने वालों की भी सूचि छोटी नही हैं। डॉ धनंजय का कहना है कि जहां तक नाटक में गीतों की उपयोगिता का प्रश्न है इसमें असहमति नहीं होनी चाहिए। स्कन्द गुप्त में गीत आवश्यकतानुसार हैं एवं वे गद्यसे स्थानापन्न नहीं हो सकते। गीतो को यदि हटा दिया जाए और उनकी जगह गद्य रख दिया जाए तो नाटक की सुन्दरता ही नष्ट हो जाएगी। गीतों में जो अभिव्यक्ति की गहराई है वह समाप्त हो जाएगी।

कई आलोचकों ने प्रसाद के नाटकों में गीत योजना के जो आरोप लगाए हैं वे उचित नही हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रसाद न केवल कवि हैं अपितु महान कवि हैं। स्कन्द गुप्त नाटक की गीत योजना अत्यन्त सशक्त उपयोगी और सार्थक है। उनके गीतों का नाटक में महत्व स्वयं सिद्ध है। डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना भी इसकी पुष्टि करते हुए लिखते हैं–

उनके सभी गीत दर्शकों एवं सामाजिकों कें हृदयमें सरसता का संचार करने वाले हैं उनमें संगीत का माधुर्य है भावों का सौंदर्य है कल्पना का विलास है प्रतिभा का अद्भुत उन्मेष है। इसी कारण इन गीतों के द्वारा वातावरण की नीरसता विलीन हो जाती है चित्त की व्यग्रता जाती रहती है। यही कारण है कि सभी नाटककार दृष्य काव्य मे गीतों की योजना किया करते हैं और ये गीत अपनी स्वरलयपूर्ण मधुर तानों के द्वारा सामाजिक हृदयों में सरसता का संचार करते हुए उन्हें आगामी नाट्यव्यापार की भीषणता भयंकरता तीव्रता अथवा कठोरताको सुगमता से सहन करने के लिए सक्षम बनाते हैं।

सन्दर्भ सूचि

1. स्कन्द गुप्त, जयशंकर प्रसाद पृ 02
2. उपरोक्त, जयशंकर प्रसाद पृ 04
3. भरत नाट्यम, भरत मुनि पृ 46
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ नगेन्द्र पृ 127
5. करुणालय, जयशंकर प्रसाद पृ 78
6. ध्रुवस्वामिनी, उपरोक्त पृ 36
7. स्कन्द गुप्त, उपरोक्त पृ 85
8. चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद पृ 57
9. स्कन्दगुप्त, उपरोक्त पृ 75
10. उपरोक्त, उपरोक्त पृ 49
11. उपरोक्त, उपरोक्त पृ 63
12. उपरोक्त, उपरोक्त पृ 137
13. उपरोक्त, उपरोक्त पृ 46